A Pratibha Spandan's Journal

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 13, Issue 01, January-June, 2025
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

भारतीय चित्रपट की भूली-बिसरी गायिकाएं

SHYAMA CHARAN GUPTA
Research Scholar, Dept. of Inst. Music, Faculty of Performing Arts, Banaras Hindu University, Varanasi

सार

भारतीय चित्रपट सदैव से भारतीय संस्कृति का परिचारक (दास) रहा है क्योंकि चित्रपट ने हमारे संस्कृति के विभिन्न एवं मुख्य विषयों को उठाकर पर्दे के माध्यम से सदैव से अंकित किया है। इसने नवजीवन के हर्ष को और गुज़रते क्षणो को एकत्रित कर मंच पर जिंदगी जीने की सदैव कोशिश की है, ऐसी ही हमारी भारतीय चित्रपट की संस्कृति एवं उसमें घुल-मिल जाने वाली स्त्री है। विश्व के सर्वाधिक सशक्त माध्यम के तौर पर चित्रपट का असर भारत की सामान्यजन पर सर्वाधिक पड़ता है, इसमें शिक्षित मनुष्य से लेकर निर्धन एवं अनपढ़ सामान्यजन तक सभी शामिल होते है। यह चित्रपट यह दृश्य एवं श्रव्य का पथ है, भारतीय चित्रपट की शुरुवात वैसे तो सन 1931 में आर्देशिर ईरानी द्वारा निर्देशित 'आलम-आरा' से होती है, जब से चित्रपट बनना शुरू हुआ तभी से भारतीय समुदाय में स्त्री की स्थिति-परिस्थिति को लेकर विविध चित्रपटों का निर्माण किया गया, जिसके अंतर्गत हम सभी देख सकते है वो फ़िल्में है- 'इंदिरा M.A.' (1934), 'देवदास' (1935), 'अछूत कन्या', 'बाल योगिनी' (1936) 'आदमी' (1939) इत्यादि प्रमुख रूप से सम्मिलित हैं। इस तरह की फ़िल्मों में नारी जीवन से संबंधित जिन समस्याओं को उजागर किया गया है, उसमें बाल विवाह, विसंगति मिलन विवाह पर्दा प्रथा, शिक्षा इत्यादि इस लेख में उन कतिपय चित्रपट गायिकाओं पर केन्द्रित है, जो की उस समय पर हैं जिस समय महिलाओं को चित्रपट में अभिनय करना अथवा चित्रपट में पार्श्व गायन या संगीत सीखना तो बहुत दूर की बात है बल्कि उनको तो एक समय के लिए बोलने तक की अनुमति नहीं दी जाती थी , इन सब के बाव्रजूद ये महिलाएं, अपनी कला एवं अपने दक्षता के साथ एवं संघर्ष के माध्यम से आई और ख्याति के शीर्ष स्थान तक पहुंची तथा नारी जीवन का अर्थ एवं मूल को समझाया।

***सूचक शब्द**:- चित्रपट, मूक, सवाक्, टुनटुन, गायिका, संगीतकार।*

स्रोत:- इस शोध लेख में प्राथमिक एवं द्वितीयक सामग्री संकलित की गयी है|

14 मार्च 1931 का दिवस हिंदी चित्रपट में संगीत की नज़र से ऐतिहासिक दिन है, क्योंकि इसी दिन भारत में बनी पहली टॉकी-चित्रपट 'आलम आरा' प्रदर्शित हुई थी। इससे पहले मूक (बिना आवाज़ या ना बोलने वाली) फ़िल्में बना करती थीं, जिनमें पात्र केवल होंठ हिलाते दिखते थे, जो परदे पर ना तो बातचीत करते दिखते थे और न ही गाना गाते। 'आलम-आरा' ने भविष्य में बनने वाली तमाम चित्रपटों के लिए गायन, नृत्य, वादन, अभिनय, व पर्दे पर बातचीत का रास्ता साफ़ कर दिया। यह फिल्म नायिका-प्रधान थी और इसका नामकरण भी नायिका के आधार पर किया गया था। इस चित्रपट में नायक विठ्ठल की भूमिका लगभग एक मूक शहजादे की थी। इसके गाने सीधे रंगमंच से लिए गए थे, क्योंकि यह फिल्म भी उस वक्त के लोकप्रिय पारसी नाटक का ही रूपांतरण था।

प्रथम गायिका- जुबैदा

इस प्रथम सवाक् चित्रपट की अभिनेत्री जुबैदा थी, इस फिल्म में इनका गाया यह गीत-

बदला दिलाए यार अब तू सितमगारों से
तू मदद पर है तो क्या खौफ़ जफ़ाकारों से,
काठ की तेग़ जो तू चाहे तो यह काम करे
जो कि मुमकिन नहीं लोहे की तलवारों से।

की ख्याति शिखर पर पहुंची थी।

भारत की प्रथम टॉकी-चित्रपट की गायिका जुबैदा गायन और अभिनय, दोनों में निपुण थीं। लगभग 12-13 साल की उम्र में सर्वप्रथम कोहिनूर फ़िल्म्स की 'गुलाब कावली' में अभिनय किया। फिर 'हीर राँझा', 'शाही चोर' व 'कनकतारा' में भी अभिनय किया। 'आलम आरा' में जुबैदा के बालों को बिखराकर और पत्थर पर बैठकर जंगल में गाने का दृश्य अविस्मरणीय था। जुबैदा वास्तव में गीत-संगीत की रानी थीं। इनके बोलने में शब्दों उच्चारण बहुत ही स्पष्ट रहता था। इन्होंने सन् 30वें दशक की अनेक महत्त्वपूर्ण फिल्मों में मुख्य अभिनेत्री की भूमिका में अभिनय करने के

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 13, Issue 01, January-June, 2025
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

साथ-साथ अपने गाने खुद ही गाए थे। फ़िल्म 'आलमआरा' में कुल 07 गाने थे, जिनमें से एक मलिका-नौबहार जिल्लोवाई ने बड़े ही करुण रस से परिपूर्ण एवं दर्द भरे स्वरों में गाया था.

रूठा है आसमां, गुम हो गया महताब, दुश्मन है अदले-जहाँ, है वीरां मेरा गुलिस्तां

जिल्लोबाई का वास्तविक नाम 'जुले खां' था।

सन् 1918 में स्टार फिल्म कंपनी में काम शुरू किया। 'इंद्रकुमारी' में प्रथम अभिनेत्री नायिका बनीं। ये 'इंपीरियल कंपनी' की अहम कलाकार थीं। मूक और सवाक् दोनों ही चित्रपटों में काम किया था। इनकी कुछ प्रमुख फिल्में, जिनमें अभिनय के साथ गाने भी गाए थे, वे हैं- द्रौपदी, भारत माता, दोरंगी दुनिया, फादर इंडिया इत्यादि।

इशरत सुल्ताना बेगम

इसी चित्रपट में तत्कालीन प्रसिद्ध गायिका बिब्बो ने भी एक गाना गाया था, लेकिन इनका नाम कास्टिंग (कलाकारों के चुनाव) में नहीं दिया गया। व्यावसायिक रूप से वे दिल्ली की गायिका थीं। सन् 1933 में बनी 'रंगीला राजपूत' चित्रपट में आपके गाए 'कच्चे निबुजा न तोहो' तथा 'मनमोहन' फिल्म का 'तुम्ही ने मुझको प्रेम सिखाय' गाने बड़े लोकप्रिय हुए थे। इनके अलावा इन्होंने 'अकेला' फिल्म में भी गाने गाए थे 'मैं मैना आजाद वन में' तथा 'बनूंगी जोगनिया बनूंगी')। इनका पूरा नाम इशरत सुल्ताना बेगम बिब्बो था। आप अभिनेत्री नहीं थीं वास्तव में आप एक गायिका थी। आपके साथ अधिकांशतः मास्टर निसार गाया करते थे। आपकी कुछ मुख्य फिल्में थीं-भारती बालक, मिल या मजदूर, वासवदत्ता, सैरे-परिस्तान आदि।

मूक फ़िल्मों की समाप्ति के बाद सवाक् फ़िल्म के आरम्भ के साथ-साथ उन सभी कलाकारों का भी भाग्य भी अस्त हो गया, जिन्हें अभिनय के साथ-साथ गाना नहीं आता या, क्योंकि तब तक पार्श्व-गायन या पार्श्व संगीत-पद्धति का ज्ञान तत्कालीन संगीतकारों को नहीं था (हालाँकि बाद के संगीतकारों को हुआ)। उस वक्त फ़िल्मों में जो कलाकार अभिनय करते उन्हें ही गीत गाने पड़ते थे, भले ही उनकी आवाज गाने के लिये उपयुक्त हो अथवा ना हो । फ़िल्म काननबाला, सुरैया, नूरजहाँ, बिब्बो जैसी वीरल अदाकारा थी, जिन्हें अभिनय के साथ साथ गाना भी आता था। रिकॉर्ड बनाने वाली कंपनियों का अस्तित्व भारत में सन् 1934-35 के आसपास उमरा था, इसलिए इससे पहले बनने/प्रदर्शित होने वाली फिल्मों के गानों के रिकार्ड मौजूद होने का प्रश्न ही नहीं उठता। सन् 1934 का एक रेकॉर्ड है 'गवैयों का जमघटा', जिसमें मिस दुलारी, जौहरा अंबाले वाली, इंदु बाला और अंगूर बाला को प्रस्तुत किया गया। ऐसे ही उस काल के एक रेकॉर्ड में कमलाझरिया व उषा रानी के नाम मिलते हैं। नलिनी जयवंत, शोभना समर्थ, लीला चिटनिस, काननबाला, देविकारानी, स्नेह प्रभा प्रधान, माया बनर्जी इत्यादि गायिकाओं को इन रिकार्डों में सुना जा सकता है।

जहाँआरा कज्जन

सन् 30वें दशक के पूर्वार्द्ध में प्रमुख गायिका जहाँआरा कज्जन की चर्चा किए बिना यह विस्मृत गायिकाओं का वृतांत सचमुच अधूरा रहेगा। वे उस समय की भारतीय फिल्मों की सर्वश्रेष्ठ गायिका थी और इन्हें अक्सर 'बंगाल की कोकिला' कहा जाता था। गायन तथा अभिनय, दोनों ही क्षेत्रों में पूर्णतः स्थापित और प्रतिष्ठित थीं। इनका जन्म सन 1915 के 15 फरवरी माह में बिहार के पटना में हुआ या और मृत्यु माह 20 दिसंबर, सन 1945 में हुई। लखनऊ से नृत्य सीखने के बाद मदन थिएटर्स में एक नर्तकी के रूप में जीवन प्रारंभ किया। इनको पहलो सवाक् फ़िल्म 'शीरीन-फरहाद' थी, जो इनके दिलकश गानों के कारण ही हिट हई थी, मास्टर निसार ने भी इस फिल्म में इनके काम किया था। इनके गाए गानों से ख्याति प्राप्त हुई फिल्में थी 'लैला-मजनू', 'अलीबाबा चालीस चोर', 'बिल्वमंगल', 'छम बकावली', 'गुलरू जरीना', 'इंद्रसभा', 'पतिभक्ति', 'ध्रुव', इत्यादि।

काननवाला

अभिनय के साथ गायन के क्षेत्र में घूम मचाने वाली अदाकारों में काननबाला (देवी) का नाम विशेष सम्मान के साथ लिया जाना चाहिए। इन्होंने अपने बैनर 'श्रीमती पिक्चर्स' तले स्वयं फ़िल्मों का भी निर्माण किया और उनमें मुख्य भूमिका भी निभाया। ये 'न्यू थियेटर्स' की मुख्य कलाकार थीं और उसकी अधिकांश फिल्मों में काम के साथ-साथ इन्होंने स्वयं गाने भी गाए। इन गीतों के गानों के रिकॉर्ड उपलब्ध है। आर० सी० बोराल के संगीत निर्देशन में इन्होंने अनेक लोकप्रिय गाने गाए। गानों की लिस्ट वैसे तो बहुत लंबी है, पर वहाँ कुछ बहुत ही ख्याति प्राप्त गीतों दिए जा रहे हैं-

'लूट लियो मन धीर'	फ़िल्म-जबानी की रीत
'दुनिया, ये दुनिया तूफानमेल'	फ़िल्म-जवाब

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 13, Issue 01, January-June, 2025
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

'अंगना में आए आली, मैं चाल चलूं मतवाली'	फ़िल्म-विद्या रति
'दूर देश का रहने वाला'	फ़िल्म-जबाब
'मदभरी-मदभरी मतवाली	फ़िल्म-लगन
'जरा रंनों से नैना'	फ़िल्म-हॉस्पिटल

इत्यादि, इनकी आवाज़ में सुरीली कसक है, साफ और दानेंदार तानें भी हैं। इनकी लोकप्रियता तत्कालीन बहुत अत्यधिक थी।

देविकारानी

इस वर्ग की दूसरी प्रमुख महिला गायिका देविका रानी है, जिन्होंने भारतीय चित्रपट की 'प्रथम महिला' होने का गौरव प्राप्त किया था, ये रवि ठाकुर की प्रपौत्री एवं प्रथम भारतीय जनरल कर्नल एम० एन० चौधरी की पुत्री थी। आरंभिक शिक्षा-दीक्षा हुई। लंदन में पूर्ण हुई। हिमांशु राय से सन 1929 में शादी होने के बाद 'बॉम्बे टॉकीज' को प्रायः सभी फिल्मों में अभिनय भी किया और स्वयं गाने भी 'अछूत कन्या' फिल्म में अशोक कुमार के साथ गाया गाना 'मैं बन की चिड़िया बन के बन-बन डोलूं रे' लोग आज भी याद करके पुरानी यादों के भवंर जाते हैं, इसी दुखांत फिल्म में इनका गाया 'उड़ी हवा में जाती है, गाती चिड़िया ये राग' भी आशातीत सफल गाना था। इनके कुछ और मर्म भेदी गाने हैं- 'तुम और मैं और मुन्ना प्यारा (फ़िल्म-निर्मला), 'भरने दे मोहे गीर' (फ़िल्म-इज्जत), 'मैंने एक माला गूथी है' (फ़िल्म-जन्मभूमि) इत्यादि।

लीला चिटनिस

देविका रानी बाद लीला चिटनिस का नाम अस्तित्व में आता है। इन्होंने भी अशोक कुमार के साथ 'जूला', 'कंगन', 'बंधन' आदि की फिल्मों में काम करके एवं गाने गाकर ख्याति हासिल की थी। वैसे, इनकी प्रथम फिल्म थी 'चुत्रों-धार'। रणजीत फिल्म की 'तुलसीदास' आपकी प्रथम सफल फिल्म थी। प्रदीप का लिखा 'कंगन' फिल्म का गीत 'हवा, तुम धीरे बहो, मेरे आते होंगे चितचोर' इनका यह गीत अपने वर्तमान समय का एक प्रचलित गीत था। इसके अलावा इनके कुछ प्रसिद्ध फिल्म गीत है- 'बता दो कोई कौन गली' (फ़िल्म-कंचन), 'देखो, कह दूंगी तुम्हारे मन की' (फ़िल्म-झूला), 'कोयलिया, पंचम में मत बोल' (फिल्म-किसी से न कहना), 'मनभावन लो सावन आया रे' (फिल्म-बंधन), 'चल चल रे नौ जवान' (फ़िल्म-बंधन)। कुछ और प्रसिद्ध फिल्में, जिनमें इन्होंने काम किया था, है- 'छोटी-सी दुनिया', 'छाया', 'वहाँ' इत्यादि। तत्कालीन ये हिंदी फ़िल्मों में चरित्र-अभिनेत्री के रूप में दिखाई दी थी।

अमीरबाई कर्नाटकी

इनका जन्म सन् 1920 में हुआ था और इन्होने बोजापुर में शिक्षा प्राप्त की। 'रतन' फिल्म में 'मिल के बिछड़ गई अँखियाँ' और 'किस्मत' फिल्म में 'अब तेरे सिवा कौन मेरा कृष्ण कन्हैया' तथा 'धीरे-धीरे आरे बादल' जैसे लोकप्रिय गाने प्रस्तुत करने वाली अभिनेत्री एवं सहगायिका अमीरबाई कर्नाटकी को कोई भूल ही नहीं सकता 'बेवफा आशिक' में ये सर्वप्रथम हीरोइन बनीं, जिन फिल्मों में इनके द्वारा अभिनय किया, वे है-'भरत-मिलाप', 'राम राज्य', 'हमारी बेटी', 'लव-कुश', 'बेदर्दी' इत्यादि। इनके कुछ प्रसिद्ध गाने हैं- 'कभी ना हिम्मत हार बंदे' (फ़िल्म-स्टेशन-मास्टर), 'प्रभु के दर्शन पाए' (फ़िल्म नरसी भक्त), 'घर-घर में दिवाली है, मेरे घर में अंधेरा' (फ़िल्म-किस्मत), 'मैं जानती हूँ, तुम न आओगे' (फ़िल्म-लीला) इत्यादि।

शमशाद बेगम

शमशाद बेगम ने सन् 1936 में ग्रामोफोन सिगर के रूप में अपना आजीविका शुरू किया। गुलाम हैदर ने सर्वप्रथम 'यमला जट' में पार्श्व गायन का मौका दिया। फिर ये लगभग पांचोली की सभी फिल्मों में आई। महबूब ने सर्वप्रथम नरगिस का प्लेबैंक दिलवाकर मुंबई के फ़िल्मी परदे पर उतारा। इनका एक गैर-फिल्मी गीत 'छोटा-सा बलमा मोरे अंगना में गिल्ली खेले' खूब जुबान पर चढ़ा था। फिल्म 'शमा' में 'एक तेरा सहारा' जैसा यादगार गाना इन्होंने ही ने गाया था। इन्होंने नौशाद एवं ओ० पी० नैयर के संगीत निर्देशन में खूब गाने गाए हैं और वर्तमान में भी इन्हें रेडियो में सुना जाता है। इनकी कुछ पुरानी के गानों की झलक हैं- 'मस्ती भरी बहार ने' (फिल्म-पगड़ी,) 'आई पिया के देश दुल्हनिया' (फ़िल्म-गृहस्थी), 'नहीं फरियाद करते हम' (फिल्म-सावन आया रे), 'मैंने देखी जग की रीत' (फ़िल्म-सुनहरे दिन में मुकेश के साथ गाया गया गीत), 'दुनिया में गरीबों को आराम नहीं मिलता' (फ़िल्म-जमींदार) इत्यादि।

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 13, Issue 01, January-June, 2025
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

बेगम अख्तर

इन्हें 'अख्तरी बाई फैजाबादी' कहा जाता था, क्योंकि 07 अक्तूबर, 1914 में ये उत्तरप्रदेश के फैजाबाद (अब अयोध्या) में जन्मी थी। धनी, लेकिन कट्टरपंथी मुस्लिर परिवार में इनका पालन-पोषण हुआ। इन्होने शास्त्रीय संगीत की गायन शैली के किराना घराने के उ० अब्दुल वहीद और पंजाब के अताहु सेन से गायन के गुर सीखे, फिर ये प्रसिद्ध गायिका जद्दन बाई से संगीत सीखने कलकत्ता आ गई। 'गजल-कोकिला' व 'गजल-मलिका'- जैसे नाम सुनते ही बेगम अख्तर का नाम स्वतः ही यादों के पर्दे में आ जाता है। गजल, दादरा, ठुमरी आदि गाने में इनका जवाब नहीं था। आपको शायद ही ज्ञात हो, इन्होंने भी फिल्मों में काम किया या और स्वयं गाने गाए थे। किन फिल्मों में इन्होंने अभिनेत्री एवं सहगायिका का काम किया वो है- 'एक दिन का बादशाह', 'मुमताज बेग़म' और 'नसीब का चक्कर'। फिल्म 'रोटी' में ये हीरोइन बनी थी। इस फिल्म का गाना 'ऐ प्रेम, तेरी बलिहारी हो' आज भो लोग याद करते हैं। बहुत फिल्मो में इन्होने पार्श्वगायिका का काम भी इन्होने था।

गानों में विविधता

इन प्राचीन महिला गायिकाओं के गीतों की विवेचना करने से एक मुख्य तथ्य जो निकल कर बाहर निकल कर आता है, वो यह कि जिदगी का ऐसा कोई भी पहलू अछूता नहीं रह जाता, जो इन्होंने अपने गीतों में ना उतारा हो; उदाहरण के लिए फ़िल्म 'अछूत' में वासंती के साथ गौहर की गाई राम धुन 'रघुपति राघव राजा राम', फ़िल्म 'पुकार' में नसीम की गाई प्रसिद्ध ग़ज़ल 'जिदगी का साज भी क्या साज है, बज रहा है और वे आवाज है', उमादेवी (वर्तमान की अभिनेत्री टुनटुन) की 'दर्द' फ़िल्म की प्रसिद्ध गजल 'अफसाना लिख रही हूँ', 'राम राज्य' चित्रपट में सरस्वती राने का गाया गीत 'बीना, मधुर मधुर कछु बोल', गायिका हंसा का 'आजाद' फ़िल्म में गाया भक्ति रस से ओत-प्रोत गीत 'माई री, मैं गिरधर के घर जाऊँ', विमला कुमारी का 'बागबान' फ़िल्म में गाया करुण रस से भरा विरह गीत 'तड़फत है मन, हाय-हाय', फ़िल्म 'चित्रलेखा' में रामदुलारी का भैरवी राग में निबद्ध छोटा ख्याल 'नील कमल मुस्काए' तथा सरदार अख्तर का 'खानदान' फ़िल्म में गाया प्रेम गीत 'आ गया मेरे बाग का माली'। कहने का तात्पर्य है कि प्रत्येक रंग और ढंग के गाने तत्कालीन गायिकाओं के गाए गीतों में मिल जाएंगे।

प्राचीन धरोहर

इस लेख के अंग में यह संभव नहीं है कि 30वें और 40वें दशकों की सभी गायिकाओं का एवं उनकी सभी उपलब्धियों का वर्णन किया जा सके। बहुत-सी ख्याति प्राप्त गायिकाओं और उनके गीतों का उल्लेख भी विस्तार-भय से करना संभव नहीं है। वे दोनों दशक बेहद नाजुक थे। शुरुवात के दशक की संघर्ष काल का प्रभाव उस समय के गानों पर आसानी से दिखाई देता है और यह प्रभाव ही इन गीतों को आज के युग से अलग करता हैं।

आलेखन, रेकॉडिंग, स्टूडियो, रिकॉडिंग आदि ने ध्वनि के क्षेत्र में क्रांति ला दी है। वहाँ कम साधन, न्यूनतम जानकारी और कम जन सहायता के पश्चात् भी उस समय के कलाकार विशेषतः स्त्री कलाकार आगे बढ़ने के लिए कतिबध्द थीं। वर्तमान के शोर-शराबे और पाश्चात्य शैली के कर्कश वाद्यवृन्द की भार से दबे गीतों के बीच जब उस युग के सीधे-सरल, न्यूनतम वाद्यवृन्द के साथ गाए मधुर गानों को सुनते हैं, तब अंतःमन स्वतः ही बीते हुए कल के मधुर वातायन में उतरकर सपनों के अमराइयों में दौड़ पड़ता है। आनंद के उग साफ-सुथरे समुद्र में श्रोता आकंठ दब जाते हैं। उन महिला गायिकाओं के गीतों की यही विशेषता उन्हें वर्तमान के स्थापित कलाकारों में कहीं ऊँचा और गौरवपूर्ण स्थान दिलाने में क्षमता हो सकी है।

सन्दर्भ

1. हिदी फ़िल्म संगीत (सत चित आनंद) डा० प्रिया जोशी वाणी प्रकाशन प्रथम संस्करण 2022 ISBN No-9789935518139
2. Cinema vision india, Siddhartha kak, January 1980, vol no-01, 04, Mumbai
3. संगीत मासिक पत्रिका, शाम सुखा, संगीत कार्यालय हाथरस, 1986
4. हिंदी फ़िल्म गीत कोश खण्ड, हर मंदिर सिंह 'हमराज', 01 (1931-1940) सितम्बर 1988 एवं 02 (1941-1950) फरवरी 1984